P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking An Analisation
जनसंचार के रूप में हिन्दी

मन्जुला शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
टी0 डी0 बी0 कालेज,
रानीगंज, पश्चिम बंगाल

सारांश

हिन्दी भाषा में संचार शब्द अंग्रेंजी के Communication का हिन्दी रूपान्तर है। Communication लैटिन के Comunicare से बना है जिसका अर्थ to talk together, confer,discourse, and consult, one with another आदि है। हिन्दी में संचार शब्द एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों के संप्रेषण के रूप में आता है। संचार के साथ जन (mass) शब्द जुड़कर 'जनसंचार' (mass-communication) का निर्माण हुआ। जनसंचार में विस्तृत पैमाने पर जानकारी फैलायी जाती है। जनसंचार के लिए समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, और फिल्म जैसे माध्यम का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी भाषा मनुष्य एवं संसार की प्रत्येक वस्तु, भावना, क्रिया एवं विचार को व्यक्त करने में सशक्त है और मनुष्य के व्यापक व्यवहार–क्षेत्र के साथ हिन्दी की क्षमता भी विकासशील है। आज हिन्दी संचार के विभिन्न माध्यमों समाचार–पत्र, पत्रिकायें जर्नल, पुस्तकें, रेडियो, दूरदर्शन इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक समाचार पत्र, कम्प्यूटर आदि सभी में अपनी उपयोगिता के साथ सक्षम है और देश तथा समाज के विकास क्रम में अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह कर रही है।

मुख्य शब्द : भाषा, जनसंचार, संप्रेषण, भूमंडलीकरण,मीडिया

प्रस्तावना

भाषा न केवल हमारे संप्रेषण, भाव–बोध एवं चिंतन का साधन है बल्कि यह हमारे विकास को भी नियंत्रित करता है। भाषा और मानव जीवन के सन्दर्भ में श्री ओम्प्रकाश सिंहल द्वारा दिया गया विचार कुछ इस प्रकार है ''भाषा पर अचूक अधिकार रखने वाला व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों के सामने ऐसे प्रभावी रूप में प्रस्तुत करता है कि घोर से घोर विरोधी को भी न केवल उसके विचार सुनने पड़ते हैं अपितु कभी–कभी उन्हें मानने के लिए विवश होना पड़ता है।''[1]

हिन्दी भाषा का स्थान विश्व की प्रमुख भाषाओं में है। अपने विकसित स्वरूप एवं क्षमता के साथ यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों शिक्षा, व्यवसाय, सरकारी, गैरसरकारी, मनोरंजन, मीडिया, ज्ञान्–विज्ञान, साहित्य एवं जनसंचार में पूरी तत्परता के साथ विद्यमान है। आज के संप्रेषण, बाजारवाद और उपभोक्तावाद के दौर में हिन्दी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सामाजिक परिवर्तन के इस युग में यह भाषा जनसंचार का प्रमुख साधन बन चुकी है। जब युग ही सूचना और जनसंचार क्रांति का हो तो संचार का माध्यम उसकी विशेष आपूर्ति करता है। अर्जुन तिवारी के शब्दों में ''जनसंचार एक सहज प्रवृत्ति है। संचार ही जीवन है। संचार–शून्यता ही मृत्यु है। आधुनिक जनजीवन और सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का ताना–बाना जनसंचार–माध्यमों द्वारा सुव्यवस्थित है। वे ही जनता, समाज और राष्ट्र के सजग प्रहरी हैं। संचार व्यवस्था समाज की प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम है। असभ्य को सभ्य, संकीर्ण को उदार तथा नर को नारायण बनाने की अभूतपूर्व शक्ति संचार में ही निहित है। इसके बिना मानव गरिमा की कल्पना नहीं हो सकती । संचार की तथ्यों और विचारधाराओं के विनिमय का विस्तृत क्षेत्र है।''[2]

वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति से उत्पन्न विभिन्न संसाधनों रेडियो, दूरदर्शन, पत्रकारिता, इन्टरनेट, मोबाइल एवं अन्य उपकरणों में हिन्दी का सामर्थ्य लक्षित है। हिन्दी अपनी सुगमता की विशेषता के कारण प्रदेश विशेष से निकलकर विस्तार पा रही है। तथा आज यह आवश्यक है कि हिन्दी को उसके विभिन्न सन्दर्भों एवं प्रयोजनों में और अधिक सामर्थ्यवान बनाया जाय। शिक्षा और साहित्य के साथ व्यावहारिक जीवन के विभिन्न सन्दर्भों में उसे और विकसित किया जाय। ओम्प्रकाश सिंहल के अनुसार 'जब किसी भाषा का क्षेत्र – विस्तार होता है। तब सर्व प्रमुख समस्या एकरूपता की आती है। मातृभाषा के रूप में

हिन्दी का प्रयोग करने वाले व्यक्ति यह नहीं जानते कि जब वे एक से अधिक रूपों का प्रयोग करते हैं तब द्वितीय भाषा अथवा विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी सीखने वालों को कितनी कठिनाई आती है।[3]

हमारे जीवन की कार्यशैली आज अप्रत्यक्ष रूप से मीडिया द्वारा निर्धारित हो रही है। देश और समाज में हो रहे विभिन्न परिवर्तनों के सन्दर्भों में मीडिया अपनी सशक्त भूमिका निभा रहा है जिसमें संचार की कार्य–प्रणाली एवं लेखन की तकनीकी पद्धतियों के साथ उसे माध्यमोपयोगी बनाना विशेष स्थान रखता है।''मीडिया की भाषा का प्रयोग बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, मजदूरों से लेकर मन्त्रियों तक, अशिक्षित से लेकर शिक्षित वर्ग तक किया जाता है। इसलिए माध्यमों की भाषा में सहजता, सुबोधता और बोलचाल के ढंग की भाषा का प्रयोग किया जाता है।''[4] आज के बाजारवाद के दौर में भारतीय बाजार में अपना माल बेचने के लिए हिन्दी का प्रयोग जरूरी है और वस्तुओं को सीधा खरीदने के आदेश में ''सभी माध्यमों में टपोरी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है।''[4]

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिन्दी की शुद्धता के लिए जनसंचार, का माध्यम प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है'' हिन्दी भाषा का यह बाजारूपन मन में भले ही टीस पैदा करता हो परन्तु उसका उपयोग अनिवार्य हो चुका है। साहित्यिक शुद्धता का आग्रह माध्यमों की भाषा में पिछड़ता जा रहा है। दूरदर्शन में चमत्कार पैदा करने वाले शब्दों की भरमार बढ़ रही है। जेसे–समाचारों में सनसनीखेज, खौफनाक, अजीबोगरीब, सच बोलेगा कैमरा, एनकाउण्टर, क्राइम, रिपोर्ट,तड़का, दिल दहलाने वाली, हँसना मना है, हँसी को रोकें, कृपया कमजोर दिलवाले इसे नहीं देखें, देश की सबसे बड़ी मर्डर मिस्ट्री आदि शब्दों, वाक्यों से श्रोता को इस तरह बाँधकर रखा जाता है, जैसे–फेवीकोल का जोड़, चले सालोंसाल (सेन्चुरी प्लाईवुड)[5]

इसके साथ यह भी सत्य है कि हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य जितना इस संचार साधन द्वारा हुआ उतना शायद ही किसी दूसरे से हुआ हो। ''जनसंचार,–माध्यमों के सहयोग से विचारों, समाचारों, भावनाओं, अनुभवों, आविष्कारों, मनोरंजन आदि की सामग्री तथा जानकारी को द्रुतगति से विशाल जनसमूह तक पहुँचाया जाता है।''[6]

अतः शिक्षा और साहित्य के साथ हमारे दैनिक जीवन में हिन्दी की उपयोगिता स्वयं सिद्ध हो चुकी है। एवं हमारे व्यापक व्यवहार क्षेत्र के साथ इसका विस्तार निश्चित है साथ ही ''जनसंचार और जनसंचार के माध्यमों का प्रथम, एवं अंतिम लक्ष्य मनुष्य–जीवन की बेहतरी है। अतः इनके केन्द्र में मनुष्य मात्र है। मनुष्य के द्वारा मनुष्य निर्मित संचार माध्यमों के सहयोग से, मनुष्य–समाज की उन्नति का यह चक्र जनसंचार का मूलमंत्र है।''[7]

उद्देश्य

आज का युग सूचना और जनसंचार का है। भूमण्डलीकरण, बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद के इस दौर में हिन्दी जनसंचार का प्रमुख साधन बन चुकी है तथा उसकी विशेष आपूर्ति कर रही है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तन के युग में यह प्रदेश और देश से निकलकर अपने विभिन्न सन्दर्भों और प्रयोजनों के साथ और भी सामर्थ्यवान बन रही है। साथ ही हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य संचार माध्यमों के सहयोग से पूर्ण हुआ। आज हिन्दी शिक्षा और साहित्य के साथ हमारे व्यापक व्यवहार क्षेत्र में उपस्थित है और व्यक्ति, समाज तथा देश की उन्नति में अपनी भूमिका निभा रही है।

उपसंहार

भाषा का क्षेत्र विस्तृत है। भाषा द्वारा मनुष्य अपने विचार, भाव–बोध एवं चिंतन को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान विशेष है। अपनी सहजता, सुगमता, सरलता एवं वैज्ञानिक विशेषताओं से सम्पूर्ण हिन्दी देश–काल के अनुरूप अपना विस्तार निरन्तर कर रही है। यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, शिक्षा, व्यवसाय, सरकारी, गैरसरकारी, मनोरंजन, मीडिया, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य आदि में तत्परता के साथ विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंहल ओम्प्रकाश 'प्रयोजन मूलक व्यावहारिक हिन्दी' जगतराम एण्ड सन्स नयी दिल्ली स. 2007, पृ. भूमिका
2. मुरूमकर दत्तात्रय 'जनसंचार और मीडिया लेखन' प्रकाशन संस्थान, दिल्ली 2012 पृ. 42
3. सिंहल ओम्प्रकाश 'प्रयोजन मूलक व्यावहारिक हिन्दी' जगतराम एण्ड सन्स 'नयी दिल्ली सं. 2007, पृ. 07
4. मुरूमकर दत्तालय, 'जनसंचार और मीडिया लेखन 'प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2012, पृ.203,
5. वही, पृ. 204
6. डॉ हरिमोहन, 'रेडियो और दूर–दर्शन पत्रकारिता' तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, 2006 पृ. 54
7. वही पृ. 55